# वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान

## (कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग)

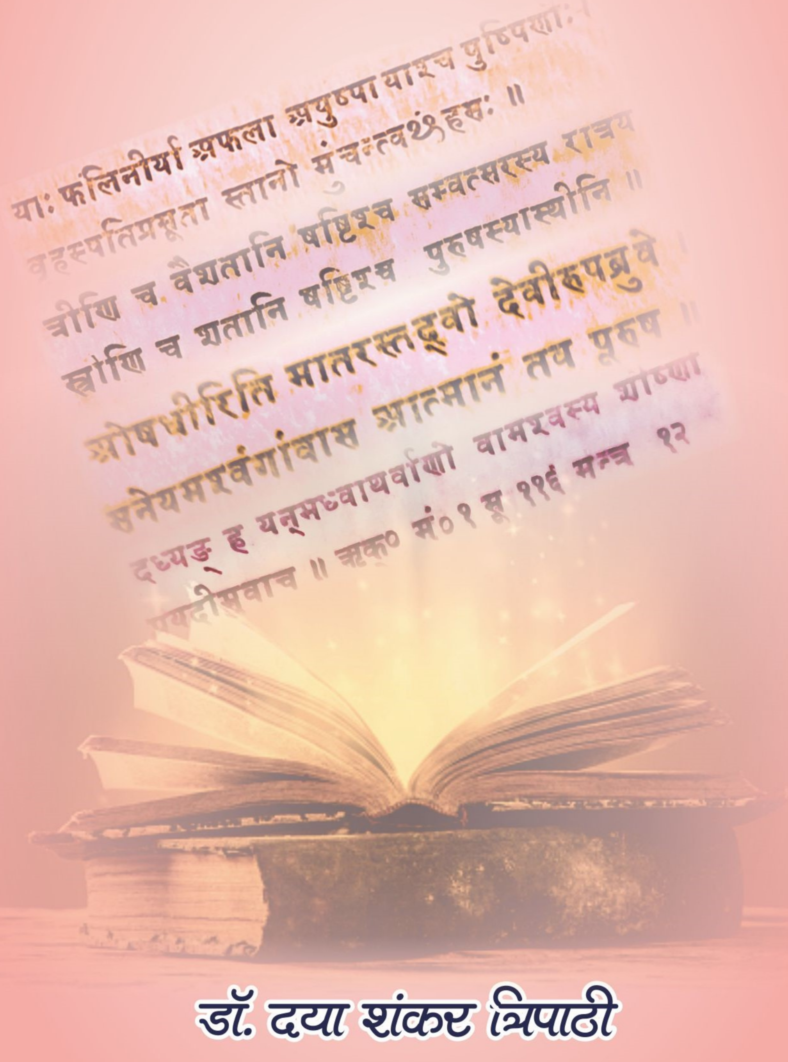

डॉ. दया शंकर त्रिपाठी

# वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान

(कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग)

डॉ. दया शंकर त्रिपाठी

वैदिक विज्ञान केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

# वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान
## (कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग)

लेखक
**डॉ. दया शंकर त्रिपाठी**
*(एम.एससी., पीएच.डी.(बीएचयू), डिप.वाई)*
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी–221001

सम्पादन
**प्रो. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी**
समन्वयक, वैदिक विज्ञान केन्द्र
एवं आचार्य, वेद–विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी – २२१ ००५

**वैदिक विज्ञान केन्द्र**
**काशी हिन्दू विश्वविद्यालय**
**वाराणसी**

# वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान (कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग)

© वैदिक विज्ञान केन्द्र

लेखक : डॉ. दया शंकर त्रिपाठी

प्रकाशन वर्ष : 2021

प्रथम संस्करण : 1000

**ISBN :**

मूल्य : ₹

**प्रकाशक : वैदिक विज्ञान केन्द्र**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी – २२१ ००५

**मुद्रक :** बी.एच.यू. प्रेस

धर्मार्थ कार्य विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वित्तीय अनुदान से प्रकाशित

# लेखकीय

प्रस्तुत पुस्तक **"वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान (कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग)"** हमारे देश के विविध वैदिक और पौराणिक साहित्यों में उपलब्ध कुछ विशिष्ट मंत्रों और श्लोकों का संग्रह है जो आज के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक समुदाय के लिए पठन और चिंतन–मनन के लिए प्रेरित करने वाला है। यह सब इस बात का प्रमाण है कि हमारा अतीत कितना समृद्ध और प्रतिभाशाली रहा है।

इस पुस्तक को तैयार करने का लक्ष्य हमारे वैज्ञानिकों, चिकित्सकों और संस्कृत साहित्य से इतर शिक्षाविदों हेतु अध्ययन और चिंतन के लिए है, जो यह बतलाता है कि हमारे ऋषि–मुनियों ने जनहित में क्या–क्या और किस–किस प्रकार के कार्य किये हैं? उन्होंने सम्पूर्ण धरा पर विद्यमान जितनी भी वनस्पतियाँ मिल सकीं, उनका अध्ययन और तर्कसंगत नामकरण तथा उनकी उपयोगिता भी लिपिबद्ध की। उनके द्वारा रोगों का निदान, स्वस्थ रहने की जीवनचर्या आदि का भी वर्णन किया गया है।

इनके साथ ही हमारे ऋषियों–महर्षियों ने मानव शरीर का विधिवत अध्ययन कर इस प्रकार से वर्णन किया है कि आज का आधुनिक विज्ञान भी उन्हें पढ़कर हतप्रभ हो जाता है और उन्हें गलत भी सिद्ध नहीं कर सकता। यह पढ़कर आश्चर्य भी होता है कि उन्होंने शरीर में हड्डियों की संख्या, नाड़ियों और धमनियों की संख्या आदि का सटीक विवरण प्रस्तुत किये हैं। हमारे ऋषियों द्वारा पृथ्वी पर ऋतुयें, वर्षा, पंचमहाभूत आदि का विस्तृत विवरण दिया गया है, जो मंत्रों और श्लोकों के माध्यम से लिपिबद्ध हैं।

दूसरी तरफ हमारे वेदों और पौराणिक ग्रंथों में अखिल ब्रह्मांड, सूर्य, पृथ्वी, उनका घूर्णन, भ्रमण और ग्रहण आदि का भी वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में पृथ्वी के आकार का वर्णन दिया गया है। उसमें लिखा है कि पृथ्वी गोल है तथा सूर्य के आकर्षण पर ठहरी हुई है। शतपथ में जो परिमंडल रूप है वह भी पृथ्वी के गोलाकार आकृति का प्रतीक है।

हमारे महर्षियों को पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा का भी ज्ञान था। यजुर्वेद में लिखा है कि पृथ्वी, जल सहित सूर्य के चारों ओर घूमती है। वेद में सूर्य को वृघ्न कहते हैं, अर्थात पृथ्वी से सैकड़ों गुना बड़ा व करोड़ों कोस दूर है न आश्चर्यजनक?

ऋग्वेद में लिखा है कि सूर्य की सात किरणें हैं जो दिन को उत्पन्न करती हैं। आधुनिक विज्ञान ने भी प्रिज्म के प्रयोग से सूर्य की किरणों के सात रंगों को अलग करके साबित कर दिया है। यह भी लिखा मिलता है कि जब चंद्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच में आ जाता है तो सूर्य पूरी तरह से स्पष्ट दिखाई नहीं देता। चन्द्रमा द्वारा सूर्य को घेर कर अन्धकार पैदा कर देना ही सूर्य ग्रहण कहलाता है। यजुर्वेद में सूर्य की ऊर्जा के बारे में लिखा है **"अपां रसम् उदवयसं"**, इस मंत्र का अर्थ है– जल का सार भाग अर्थात् हाइड्रोजन और उदवयस् शब्द का अर्थ है ऊर्जा या गैस। आधुनिक विज्ञान की भी मान्यता है कि पृथ्वी और सूर्य पर सबसे अधिक मात्रा में विद्यमान तत्त्व हाइड्रोजन ही है। हमारे सूर्य से जो ऊर्जा चारों तरफ विसर्जित होती है और जिसका कुछ अंश हमारी धरती को प्राप्त होता है, वह हाइड्रोजन और हीलियम की क्रिया–प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है। ऋग्वेद में बिना ईंधन उड़ने वाले विमान का भी वर्णन दिया गया है।

इस पुस्तक में ऐसे भी सन्दर्भ दिये गये हैं जिसमें यक्ष्मा रोग से मुक्ति, श्वेत कुष्ठ निवारक औषधि, शल्य कार्य द्वारा प्रसव एवं लौहशलाका द्वारा मूत्रावरोध को दूर करने का वर्णन है। अथर्ववेद में कुष्ठ रोग के निवारण हेतु कुष्ठा औषधि का जिक्र है और कुष्ठा औषधि के प्राप्तिस्थल का भी वर्णन है। आधुनिक विज्ञान ने भी कुष्ठा की पहचान की है। इसकी और भी कई प्रजातियाँ खोजी गयी हैं। सूर्य रश्मि द्वारा चिकित्सा, जल और वायु, आहार आदि जीवनोपयोगी सन्दर्भों के विवरण भी दिये गये हैं।

हमारे शास्त्रों में रसायन चिकित्सा के माध्यम से च्यवन ऋषि को जरा अवस्था से मुक्ति दिलाने का वर्णन है। एक स्थान पर दधीचि को अश्व का सिर लगा कर मधु विद्या को पढ़ने का भी

वर्णन इस प्रकार से मिलता है – भगवान इन्द्र द्वारा महर्षि दधीचि को मधु विद्या इस शर्त पर पढ़ाया गया, कि यदि वह दूसरे को पढ़ायेंगे तो उनका सिर काट लिया जायेगा। तब अश्विनीकुमार ने दधीचि ऋषि के सिर को काटकर अश्व का सिर लगा दिया और उनसे मधु विद्या पढ़ ली। इसके बाद क्या हुआ? हुआ यह कि जब भगवान इन्द्र को ज्ञात हुआ, तो उन्होंने दधीचि के अश्व वाले सिर को काट कर अपना शर्त पूरा कर लिया। बाद में अश्विनीकुमार ने दधीचि का पहला वाला सिर जोड़कर उन्हें पूर्व की भाँति कर दिया।

हमारे शास्त्रों में इस प्रकार के अनेक वर्णन मिल जायेंगे, जिन्हें एक साथ प्रस्तुत करना असंभव है। जिन्हें इस तरह के संदर्भों में रुचि हो और विस्तार से पढ़ना चाहते हों, उन्हें किसी शास्त्र के जानकार व्यक्ति से मिलकर पढ़ने और समझने का प्रयास करना चाहिए।

इस पुस्तक में एक स्थान पर वायु का वर्णन किया गया है, जिसमें बतलाया गया है कि वायु दो प्रकार के होते हैं, इन्हें देवदूत भी कहते हैं। दो प्रकार की वायु में पहला समुद्र के ऊपर चलता है और दूसरा पृथ्वी के ऊपर। समुद्र का वायु बलदाता है, जबकि पृथ्वी का वायु हमारे विकारों को अपने साथ ले जाता है। इस प्रकार के अनेक मंत्र हमारे वैदिक और पौराणिक साहित्य में मिल जायेंगे।

आज आवश्यकता है कि ऐसे सन्दर्भों को खोज–खोज कर उनमें छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किये जायें जिससे हमारे ज्ञान–विज्ञान समृद्ध अतीत पर गर्व करने का मार्ग प्रशस्त हो सके और हमारा मानव समाज लाभान्वित हो सके।

मैं सर्वप्रथम वैदिक विज्ञान केन्द्र के समन्वयक प्रो. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक लेखन के मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया और इसके सम्पादन हेतु सहर्ष तैयार हो गये। पुनः मैं ''वैदिक विज्ञान केन्द्र'' के प्रकाशन समिति के सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने

इस पुस्तक की उपयोगिता को देखते हुए प्रकाशन हेतु स्वीकृति प्रदान की।

मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 राकेश भटनागर जी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनका इस प्रकार के कार्यों में सहयोग रहता है। मैं विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो0 विजय कुमार शुक्ल का आभारी हूँ, जिनका वैदिक और पौराणिक साहित्य को सामने लाने में सदैव रुचि रही है। मैं विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 नीरज त्रिपाठी के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिनका वैदिक विज्ञान केन्द्र की स्थापना, विकास और प्रकाशन सम्बन्धी कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस पुस्तक लेखन में यदि मैं अपने पिता और प्रथम गुरू वैद्य डॉ0 इन्द्रदेव त्रिपाठी (स्वर्गीय) को भूल जाऊँगा तो यह मेरी घोर कृतघ्नता होगी जिनका मेरे अन्दर बाल्यकाल से ही शुद्ध उच्चारणयुक्त संस्कृत और हिन्दी पढ़न और लेखन के प्रति जबरदस्त रुचि पैदा करनेका श्रेय है। मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही मुझे संस्कृतनिष्ठ बनाने में मेरे पिताश्री के गुरू और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वेद विद्वान् तथा तत्कालीन संस्कृत महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वेद विभाग के अध्यक्ष पं. जगन्नाथ त्रिपाठी और पिताश्री के सहपाठी पं0 दया शंकर द्विवेदी का विशेष योगदान है। मैं इन दोनों विद्वानों के चरणों में हृदयांजलि अर्पित करता हूँ।

अन्त में, मैं इस पुस्तक के प्रकाशन के दौरान प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इस पुस्तक के लेखन में मुझे अनेक ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ा है, मैं उनके लेखकों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आशा करता हूँ कि यह पुस्तक हमारे पाठकों के लिए रुचिपूर्ण होगी और उन्हें इस प्रकार के कार्यों हेतु प्रोत्साहित करने का कार्य करेगी।

**— डॉ0 दया शंकर त्रिपाठी**

# <u>संपादकीय</u>

वैदिक विज्ञान शास्वत है। अखिल ब्रह्मांड में जो कुछ भी है और हो सकता है, वह हमारे ऋषि–मुनियों द्वारा पहले किसी न किसी रूप में श्रुति एवं ज्ञान परम्परा में लिपिबद्ध कर मानव कल्याण हेतु प्रस्तुत किया गया है।

वैदिक विज्ञान और आधुनिक विज्ञान के मध्य समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से पिछले कुछ वर्षों से काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वैदिक विज्ञान केंद्र के स्थापना की योजना बन रही थी। इसका साकार रूप लेने के लिए वर्ष 2018 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक १८ सितंबर २०१८ को इसका शिलान्यास और वर्ष 2020 में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा १६ फरवरी को वैदिक विज्ञान केन्द्र के चार मंजिली भवन का लोकार्पण किया गया।

वैदिक विज्ञान केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हमारे वेदों और पौराणिक ग्रंथों में छुपे हुए वैज्ञानिक अवधारणाओं, सिद्धांतों, मंत्रों और रहस्यों का अन्वेषण व अनुसंधान कर विश्व पटल पर प्रस्तुत करना है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि यह केन्द्र उत्तर प्रदेश शासन के धर्मार्थ कार्य विभाग द्वारा वित्तीय अनुदान से निर्मित हुआ है

प्रस्तुत पुस्तक **"वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान – कुछ महत्वपूर्ण संदर्भ"** वैदिक विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की श्रृंखला में यह पंचम प्रकाशन है। इस पुस्तक के लेखक डॉ. दया शंकर त्रिपाठी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर और पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की है और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से सीनियर रिसर्च फेलो व रिसर्च एसोसिएट रह चुके हैं।

डॉ. त्रिपाठी संस्कृत साहित्य में बचपन से ही रुचि लेते हैं जिसका परिणाम इस पुस्तक के रूप में सामने आया है। यह पुस्तक उन वैज्ञानिकों और जिज्ञासुओं के लिए एक छोटा नमूना

प्रस्तुत करता है जो विज्ञान के क्षेत्र में उच्च्य स्तरीय ज्ञान रखते हैं और वैदिक साहित्य में विद्यमान वैज्ञानिक ज्ञान को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा वैदिक और पौराणिक ग्रंथों में से विज्ञान के कुछ प्रसंगों को संस्कृत और उनका हिन्दी में अर्थ सहित प्रस्तुत किया गया है। इन श्लोकों और अर्थों के माध्यम से प्राचीन साहित्य में रुचि रखने वाले वैज्ञानिक यह समझ सकते हैं कि विज्ञान में दिए गए आधुनिक सिद्धांतों को हमारे ऋषि–मुनियों ने बहुत पहले ही प्रतिपादित कर दिया था जिन्हें विदेशी षडयंत्रकारियों द्वारा चरणबद्ध तरीके से नष्ट कर भारतीय ज्ञान–विज्ञान परंपरा को बहुत बड़ी क्षति पहुंचाई।

मैं, आशा करता हूँ कि यह पुस्तक हमारे वैज्ञानिकों के लिए एक लघु नमूने के रूप में हमारे विलुप्तप्राय ज्ञान को उजागर करेगा और हमारे वैज्ञानिक भी इसका लाभ उठाएंगे तथा इस दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी करेंगे। मैं, यह भी आशा करता हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक हमारे प्राचीन और आधुनिक विज्ञान के छात्रों और वैज्ञानिकों के लिए कुछ नया करने की प्रवृत्ति पैदा करेगी और अपने ऋषियों–महर्षियों की कृतियों के प्रति अगाध श्रद्धावान और नतमस्तक रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त ही सरल एवं स्पष्ट शब्दों में लिखी गई है। रचना की दृष्टि से लेखक का कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

मैं सर्वप्रथम माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के प्रति आत्मीय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्राचीन और अद्यतन विज्ञान को इस वैदिक विज्ञान केन्द्र के माध्यम से एक मंच पर लाकर विश्व समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु अपना अतुलनीय योगदान किया है। मैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति और वैदिक विज्ञान केंद्र के संरक्षक प्रो. राकेश भटनागर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने केन्द्र को अति शीघ्र अस्तित्व में लाने हेतु सतत् प्रयास किया है। पुनः मैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.

विजय कुमार शुक्ल के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जो एक ख्यातिलब्ध शल्य चिकित्सक होते हुए भी वैदिक विज्ञान में विशेष रूचि रखते हैं। मैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. नीरज त्रिपाठी के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस केन्द्र को सुदृढ़ और उपयोगी बनाने में सदैव अपना महत्वपूर्ण सुझाव और सहयोग दिया है। हम संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय के संकाय प्रमुख प्रो. बिंध्येश्वरी प्रसाद मिश्र के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिनका सतत सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं अपने गुरु प्रो. हृदय रंजन शर्मा के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने वैदिक विज्ञान केन्द्र की अवधारणा निर्माण में प्रारंभ से ही अपना योगदान दिया है।

मैं पुस्तक के लेखक डॉ. दया शंकर त्रिपाठी जिन्होंने विशेष रुचि लेकर इस पुस्तक का लेखन, संशोधन व संपादन कर इसे उत्कृष्ट बनाया है, को इस उत्कृष्ट कार्य हेतु विशेष रूप से बधाई देता हूँ। मैं वित्तीय एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु धर्मार्थ कार्य विभाग, उत्तर प्रदेश शासन के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ।

**– प्रो0 उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी**

# विषयानुक्रमणिका


| क्र.सं. | विषय | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1. | परिचय | 01 |
| 2. | औषधि प्रार्थना | 04 |
| 3. | औषधि संरक्षण निर्देश | 08 |
| 4. | सर्वोत्तम औषधि | 10 |
| 5. | अग्नि | 21 |
| 6. | जल | 23 |
| 7. | ऋतु | 32 |
| 8. | वर्षा | 33 |
| 9. | शारीरिक | 36 |
| 10. | प्रसव एवं मूत्रावरोध | 39 |
| 11. | सूर्यरश्मि | 41 |
| 12. | वायु | 42 |
| 13. | यक्ष्मा रोग और राजा सोम | 45 |
| 14. | श्वेतकुष्ठ निवारक औषधि | 49 |
| 15. | अश्विनीकुमार के विचित्र कार्य | 55 |
| 16. | आहार | 59 |
| 17. | सूर्य | 61 |
| 18. | पृथ्वी | 65 |
| 19. | हमारे प्राचीन श्रेष्ठ वैज्ञानिकों के नाम | 67 |
| 20. | स्वास्थ्य रक्षण और ज्ञानप्राप्ति | 68 |
| 21. | विविध | 70 |

# श्लोकानुक्रमणिका


| क्र.सं. | श्लोक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1. | ओषधीः प्रतिमोदध्वं | |
| 2. | आयुर्बलं यशो वर्चः | |
| 3. | ओऽम्! मधुमतीरोषधीर्द्याव | |
| 4. | याः फलिनीर्या अफला | |
| 5. | मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो | |
| 6. | नाशयित्री बलासस्यार्शस | |
| 7. | मावोरिषत् खनिता यस्मैचाहं | |
| 8. | दीर्घायुस्त ओषधे खनितायस्मै | |
| 9. | या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः | |
| 10. | या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः | |
| 11. | याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च | |
| 12. | सहस्व मे अरातीः | |
| 13. | यदि मा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त | |
| 14. | वनस्पतिः सह | |
| 15. | या ओषधीः पूर्वाजाता | |
| 16. | शतं वो अम्ब धामानि | |
| 17. | ओषधीरिति मातरस्तद्वो | |
| 18. | यत्रौषधीःसमग्मत राजानः | |
| 19. | सहमानेयं प्रथमा | |
| 20. | पाटामिन्द्रौ व्याश्नादसुरेभ्यस्तरीतवे | |
| 21. | यो गिरिष्वजायथा | |
| 22. | सुपर्णसुवने गिरौ जातं | |
| 23. | उत्तमोनाम कुष्ठास्युत्तमोनामतेपिता | |
| 24. | रोहण्यसि रोहण्यस्थ्नश्छिन्नस्य | |
| 25. | यत्तेरिष्टं यत्ते द्युतमस्ति | |
| 26. | भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्वत्थात् | |
| 27. | विद्रधस्य बलासस्य | |

| | |
|---|---|
| 28. | ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये |
| 29. | अहं वैश्वानरो भूत्वा |
| 30. | विश्वम्भर विश्वेन |
| 31. | यदग्निरापोअदहत् प्रविश्ययत्राकृण्वन् |
| 32. | अप्स्वन्तरममृतमप्सु भेषजम् |
| 33. | अग्निञ्च विश्व |
| 34. | हिमवतः प्रस्रवन्ति |
| 35. | आपः इद्वा भेषजीस्तास्ते |
| 36. | पानीयं प्राणिनां प्राणा |
| 37. | नवमासधृतं गर्भे |
| 38. | अपां संस्पर्शनात् स्नानात् |
| 39. | आन्तरीक्षमुदकानां |
| 40. | नास्ति मेघसमं तोयं |
| 41. | जलमेकविधं सर्व |
| 42. | शुद्धं भूमिगतं तोयं |
| 43. | यथा भूमिस्तथा तोयं |
| 44. | पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना |
| 45. | मन्दोऽप्यमन्दतामेति |
| 46. | नहि कतकं पयसः |
| 47. | अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नं |
| 48. | ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो |
| 49. | समुत्पतन्तु प्रदिशो |
| 50. | उदीरयत मरुतः |
| 51. | सम्बत्सरं शशयाना |
| 52. | तिष्ठावरे तिष्ठ |
| 53. | शतस्य धमनीनां |
| 54. | परिवः सिकतावती |
| 55. | त्रीणि च वैशतानि |
| 56. | वि ते भिनद्मि |
| 57. | यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि |

| | |
|---|---|
| 58. | प्रतेभिनद्मि मेहनं |
| 59. | ये अंगानि मदयन्ति |
| 60. | यद होवात तेऽमृतस्यनिधिर्हितः |
| 61. | आ वात वाहिभेषजं |
| 62. | द्वाविमौ वात आसिंधोरा |
| 63. | वायोर्जातः स्वयं ब्रह्मा |
| 64. | वायुरायुर्बलं वायुर्वायुर्धाता |
| 65. | त्वां गन्धर्वा |
| 66. | राज्ञश्चन्द्रमसोयस्मादभूदेष |
| 67. | ओषधयः समवदन्त |
| 68. | यस्योषधीः प्रसर्पथाङगमङगर्म |
| 69. | यः कीकसाः प्रश्रृणाति |
| 70. | न तं यक्ष्मा |
| 71. | विष्वत्रतस्माद यक्ष्मा |
| 72. | नक्त जातास्योषधे |
| 73. | आसुरी चक्रे प्रथमेदं |
| 74. | सरूपा नाम ते |
| 75. | एतु देवस्त्रायमाणः |
| 76. | यत्र नावप्रभ्रंशनं |
| 77. | इन्द्रस्य या मही |
| 78. | इमं में अग्ने पुरुषं |
| 79. | अग्निष्टे निशमयुतु |
| 80. | या ग्रैव्याअपचितोथो |
| 81. | जुजुरुषो नासत्योत |
| 82. | चरित्रंहि वेरिवाच्छेदि |
| 83. | दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वाणो |
| 84. | श्रुतं तच्छासुरिव |
| 85. | युवं नरास्तुवते |
| 86. | हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां |
| 87. | ऋबीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः |

88. शतं मेषान् वृक्ये
89. याभिः शचीभिर्वृषणा
90. प्राणाः प्राणभृतामन्नं
91. न चाहारसमं किञ्चिद्
92. अमृतं शिशिरे वह्निरमृतं
93. अजीर्जे भेषजं वारि
94. सूर्य आत्मा
95. सप्त दिशो
96. शकमयं धूमम्
97. उत पुरस्तात्
98. एको अश्वो
99. अव दिवस्तारयन्ति
100. यं वै सूर्य
101. अपां रसम्
102. अनेनो वो मरुतो
103. चक्राणास परीणह
104. आयं गो पृश्निर
105. दिवि सोमो अधिश्रित
106. योजनानां सहस्रे द्वे
107. काष्ठा निमेषा दश
108. वैज्ञानिकाश्च कपिलः
109. धर्मार्थकाममोक्षारामारोग्यं
110. तद्यथोक्तमनुवर्त्तमानः
111. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य
112. मूलं ब्रहमा तना
113. करा रविन्देन्पदारविन्दम्
114. दशकूप समावापी
115. यः शास्त्र विर्धमुत्सृज्य
116. दशहस्तान्परित्यज्य मूत्रं
117. अयज्ञियैरनाद्रैश्च तृणैः

# लेखक परिचय

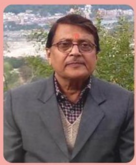

## डॉ. दया शंकर त्रिपाठी

**प्राथमिक शिक्षा :** सेन्ट्रल हिन्दू (ब्वायज) स्कूल, कमच्छा, वाराणसी (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संबद्ध)

**उच्च शिक्षा :** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक (1978), स्नातकोत्तर (1981) तथा पीएच.डी. (1988)

**शोध अनुभव :** 16 वर्ष से अधिक, शिक्षण अनुभव : 20 वर्ष से अधिक

**पुरस्कार एवं सम्मान**

1. उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा बीरबल साहनी पुरस्कार 2016 से सम्मानित।
2. उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा होमी जहांगीर भाभा पुरस्कार 2020 से सम्मानित।
3. विज्ञान साहित्य रत्न (राष्ट्रीय सम्मानोपाधि) 2018, अखिल भारतीय काव्य, कथा एवं कला परिषद, इन्दौर
4. राजभाषा पुरस्कार, राजभाषा प्रकोष्ठ, का.हि.वि.वि. द्वारा वर्ष-2018 के लिए राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु।

**पुरस्कार/पद/ छात्रवृत्तियाँ (अनुसंधान काल के अन्तर्गत)**

1. रिसर्च फेलो (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) - अप्रैल 1983 से मार्च 1985 तक, 2. रिसर्च असिस्टेन्ट एवं सीनियर रिसर्च असिस्टेंट - (उ.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, लखनऊ) क्रमशः अगस्त 1985 से अगस्त 1987 एवं 1987 से 1988 तक, 3. सीनियर रिसर्च फेलो (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली) फरवरी 1988 से जुलाई 1990 तक, 4. रिसर्च एसोशिएट (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली) जुलाई 1990 से जुलाई 1995 तक, 5. परियोजना अधिकारी, प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली), अगस्त 2002 से मार्च 2003 तक, 6. प्राचार्य, वी एम डिग्री कॉलेज, सोनभद्र, जनवरी 2005 से जून 2007 तक

**प्रकाशन**

1. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में - 23 से अधिक, 2. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/संगोष्ठियों में सहभागिता तथा संक्षिप्त प्रकाशन - 40, 3. लोकप्रिय वैज्ञानिक लेख - 100 से अधिक, 4. पुस्तकों व पत्रिकाओं का लेखन व सम्पादन कार्य 25 वर्षों से अधिक, 5. प्रकाशित पुस्तकें-11, अनुवादित-6, पुनरीक्षण-3, पत्रिका सम्पादन-21

**शोध उपलब्धियाँ**

1. अनुसंधान काल के अन्तर्गत एक नयी सब्जी प्रजाति 'सोलेनम मैक्रोकार्पान' को प्रथम बार भारत (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) में उत्पादन (Introduced) कर अनुसंधान कार्य किया। साथ ही, सोलेनम वंश के लगभग दस जातियों/प्रजातियों पर भी अनुसंधान कार्य किया।
2. भोपाल गैस दुर्घटना जिसमें मिथाइल आइसोसाइनेट नाम की जहरीली गैस का रिसाव हुआ था, का वहाँ के आसपास की वनस्पतियों पर वाह्य तथा अनुवांशिक प्रभाव का प्रथम बार अध्ययन किया जिसकी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हुई।

आवास : बी 2 / 63 सी-1 के, भदैनी, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
ई-मेल : dstripbhu.vns@gmail.com

**प्रकाशक**

**वैदिक विज्ञान केन्द्र**

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

ई-मेल : www.cvsbhu.in

वेबसाइट : vvkendra@bhu.ac.in

दूरभाष : 0542-2368372

मूल्य : 200/-

ISBN 978-81-951360-6-3